अध्ययन सामग्री

विषय - हिन्दी

वर्ग - स्नातक खण्ड (3) III

प्रश्न पत्र - VI

सुमन कुमारी
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
हरप्रसाद दास जैन महाविद्यालय
(आरा)

दिनांक - [illegible]

" ध्वनि "

जीवनी

जीवनी साहित्य की अतिमहत्वपूर्ण विधा है। किसी व्यक्ति विशेष का जीवन -वृत्तान्त जीवनी कहलाता है। जीवनी का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'लाइफ' अथवा 'बायोग्राफी' है। सामान्यतः जीवनी में चरित - नायक के सम्पूर्ण जीवन की चर्चा होनी चाहिए, परन्तु यह कोई निश्चित नियम नहीं है। बहुत सी जीवनियों चरितनायक के जीवन - काल में लिखी जाती है और उनमें सम्पूर्ण जीवन का सन्निवेश सम्भव नहीं हो सकता। इसीलिए "जीवन साहित्य का एक छोर स्फुट संस्मरण को माना जा सकता है और दूसरा छोर उस जीवनी को जिसमें जन्म से लेकर मृत्यु तक का इतिहास हो।" जीवनी में अतीत का चित्रण और सत्य घटनाओं का क्रमबद्ध विवरण मिलता है। जीवनी में लेखक व्यक्ति के जीवन संघर्षों के साथ-साथ उसके आन्तरिक स्वभाव और व्यक्तित्व का चित्रण करता है। एक तरह से जीवनी आत्मकथा के अत्यंत निकट है किन्तु आत्मकथा से भिन्न। इन दोनों गद्य विधाओं में सबसे बड़ा अन्तर यह है कि आत्मकथा स्वयं लिखी जाती है और जीवनी किसी और के द्वारा। इसी कारण से आत्मकथा उत्तमपुरुष की शैली में रखी जाती है और जीवनी अन्य पुरुष की शैली में। जीवनी ~~लेखक~~ लेखन एक कठिन कार्य है। डॉ० कमलेश के शब्दों में - "जीवनी लिखना श्रम -साध्य कार्य है और उसमें बहुत कुछ सतर्कता बरतनी पड़ती है। चरित - नायक के देवत्व अथवा राक्षसत्व का संतुलित रूप सामने रखकर ही यह कठिन कार्य सम्पन्न

हो सकता है और इसी से पाठक जीवनोपयोगी तथ्यों का संकलन कर सकता है। अत्याधिक प्रशंसा अथवा अत्याधिक निन्दा से बचना जीवन - लेखक के लिए नितांत आवश्यक है।"

हिन्दी का जीवन साहित्य अधिक समृद्ध नहीं है। यों तो बहुत सी जीवनियाँ लिखी गई हैं लेकिन वे नाम-मात्र के लिए ही हैं। उनमें साहित्यिक सौष्ठव एवं कलात्मकता का अभाव है। जैसा कि - डॉ० हरदयाल ने लिखा है - "हिन्दी में आधुनिक काल में बहुत बड़ी संख्या में जीवनियाँ लिखी गई हैं। इनमें से ऐसी जीवनियों की संख्या बहुत बड़ी है, जिनका साहित्यिक कृति के रूप में कोई महत्व नहीं है। इस प्रकार की जीवनियों को यदि हम एक ओर उठाकर रख दें, तो ऐसी जीवनियाँ कम ही बची रहेंगी, जिन्हें आदर की दृष्टि से देखा जा सके और जिनमें साहित्यिक सृजनशीलता का गुण हो।" हिन्दी का जीवनी साहित्य मात्रा की दृष्टि से कम नहीं है किन्तु गुण की दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। इस कोटि की अधिकांश कृतियाँ जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं का विवरण मात्र हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में भारतेन्दु युग में जीवनियाँ लिखी गईं। रमाशंकर व्यास, प्रतापनारायण मिश्र और जगन्नाथ दास रत्नाकर, बालमुकुंद गुप्त इस काल के प्रमुख जीवनी-लेखक हैं। इसके बाद द्विवेदी युग में महापुरुषों और समाज-सुधारकों की जीवनियाँ लिखी गईं क्योंकि यह सुधारवादी भावनाओं का युग था। इसके बाद स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनियाँ लिखी गईं क्योंकि राष्ट्रीय आन्दोलन तीव्र हो उठा था।

इसके उपरान्त हिन्दी में श्रेष्ठ जीवनियों लिखी गई है का प्रणयन हुआ। प्रेमचंद, आनन्द कौशल्यायन, सुन्दरलाल, रामनाथ सुमन आदि ने संतों-महात्माओं तथा राजनीतिक नेताओं की जीवनियाँ लिखी।

मुन्शी प्रेमचंद तथा निराला पर श्रेष्ठ जीवनियाँ लिखी गई है। अमृतराय द्वारा लिखित प्रेमचंद पर 'कलम का सिपाही', डॉ० रामविलास शर्मा द्वारा रचित 'निराला की साहित्य साधना' अत्यन्त उत्कृष्ट बन पड़ी है। डॉ० शांति जोशी ने सुमित्रानन्दन पंत की जीवनी लिखी है। विष्णु प्रभाकर ने 'आवारा मसीहा' नाम से हरिश्चन्द्र की जीवनी तथा भगवती प्रसाद सिंह ने 'मनीषी की लोकयात्रा' नाम से गोपीनाथ कविराज की जीवनी लिखी है। श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी उनकी पुत्री सुधा चौहान ने लिखी है। ये हिन्दी की श्रेष्ठ जीवनियाँ है। निश्चय ही जीवनी-विधा का भविष्य उज्ज्वल है।

Scanned with CamScanner